1

पेंसिल और रंगों से प्रकृति-चित्रण

प्रकृति (Nature) शब्द लैटिन भाषा के 'नैचुरा' (Natura) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है जन्म। इस शब्द को आज अनेक रूप में प्रयुक्त किया जाता है परन्तु अक्सर इसे भू-विज्ञान एवं वन्य जीवन के संदर्भ में ही लिया जाता है जिसका आशय प्राकृतिक पर्यावरण अथवा जंगल होता है। प्राकृतिक चित्रण में यह महत्वपूर्ण है कि आवश्यक रूप एवं आकारों को पहचाना जाए। चित्र का उद्देश्य हमारी आँखों एवं मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वे जीवन की सामान्य वस्तुओं को देख एवं समझ सकें तथा प्रकृति में व्याप्त सौन्दर्य को पकड़ सकें। प्रकृति में लगभग हर प्रकार के रंग, टैक्सचर, आकार, अनुपात, संतुलन एवं सौन्दर्यपूर्ण लयात्मकता का एक समुचित प्रकार से समन्वय होता है। अत: प्रकृति की विशालता को कागज पर उतारना लगभग असंभव है। किन्तु कला तत्वों के अभ्यास से प्रकृति को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पढ़ने के उपरान्त आप :

- वृक्ष, फूल आदि के चित्र आसानी से बना सकेंगे;
- विभिन्न प्राकृतिक आकारों का अध्ययन एवं संयोजन कर सकेंगे;
- प्रकृति का अध्ययन करते समय उसके विभिन्न अवयवों के अनुपात, संतुलन एवं लय के बीच अन्तर को पहचान सकेंगे;
- विभिन्न रंगों एवं उनकी छटाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे;
- हल्के एवं गहरे शेडस् के द्वारा प्रकाश के स्रोत को चित्रित कर सकेंगे;
- संयोजन में स्थान, संतुलन एवं परिदृश्य को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- आलंकारिक एवं प्राकृतिक रूपों के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

1.1 परिदृश्य

यह चित्रांकन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। इसकी सहायता से द्विआयामी सतह पर त्रिआयामी प्रभाव का भ्रम उत्पन्न किया जाता है। इसे यदि हम सामान्य शब्दों में कहें तो जैसे-जैसे देखने वाले से वस्तु की दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वे छोटे दिखाई देने लगते हैं। हम यहाँ परिदृश्य के तीन प्रकार देखेंगे और यह भी देखेंगे कि प्रकृति चित्रण में कलाकार किस प्रकार इनका प्रयोग करते हैं।

(क) एक बिंदु परिदृश्य

(ख) दो बिंदु परिदृश्य

(स) तीन बिंदु परिदृश्य

अभ्यास आरंभ करने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि दृष्टि-रेखा अथवा नेत्रतल अथवा क्षितिज का अर्थ क्या है? यहा एक काल्पनिक अक्ष है, जहाँ हमारी दृष्टि (नेत्र) भूमि सतह के समान्तर टिकती है। यह व्यक्ति की ऊँचाई पर निर्भर करती है, इसे हम वह बिन्दु भी कह सकते हैं, जहाँ से देखने वाले एवं वस्तु के मध्य की दूरी मापी जाती है।

1.1.1 एक बिंदु परिदृश्य

कल्पना कीजिए कि एक चित्रकार किसी सीधी सड़क अथवा रेलवे लाइन की पटरियों के मध्य खड़ा है एवं दूर देख रहा है। वह किसी कागज पर प्रकृति के इस दृश्य को चित्रित करना चाहता है। आप यह देखेंगे कि सड़क अथवा रेल पटरियों के दोनों किनारे दूरी बढ़ने के साथ एक दूसरे

चित्र 1.1: रेल की पटरियां, एक बिंदु परिदृश्य

के करीब आते दिखते हैं तथा एक दूरी के बाद आपस में मिलकर हमारे दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। यही नहीं, सड़क के दोनों ओर लगे वृक्ष भी इसी प्रकार दिखते हैं, पास वाले बड़े एवं दूर स्थित छोटे। जिस बिन्दु पर ये दोनों किनारे मिलते प्रतीत होते हैं, उसे अदृश्यता बिंदु (वैनिशिंग प्वॉइंट) कहते हैं।

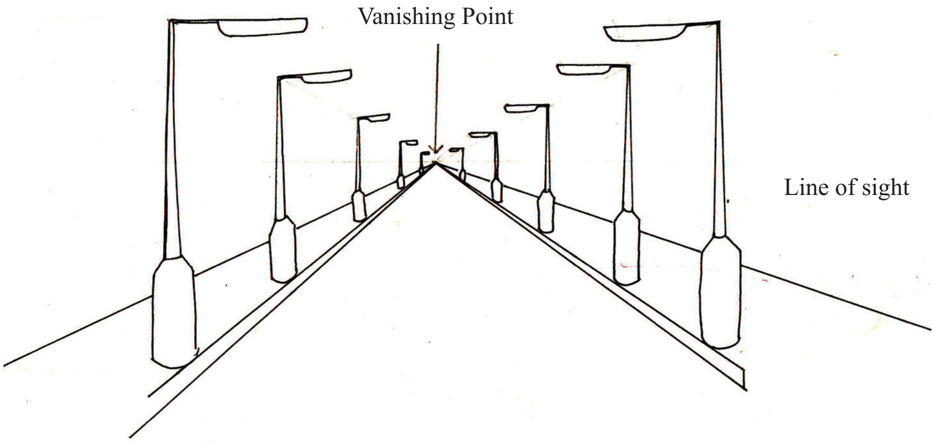

चित्र 1.1(क): सड़क, एक बिंदु परिदृश्य

1.1.2 दो बिंदु परिदृश्य

उदाहरण के लिए, किसी भवन को उसके कोने वाले बिन्दु से देखें अथवा दोनों ओर जा रही सड़क को कोने से देखें तो हमें वे दूरी बढ़ने के साथ दोनों ओर आकार में घटते दिखाई देते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी वस्तु के हमें दो किनारे दिखते हैं, तब उसके चित्रण में दो वेनेशिंग प्वॉइंट आवश्यक हैं। शहरों के दृश्य बनाते समय इस प्रकार के परिदृश्य का अनुभव होता है।

चित्र 1.2: शहर का दृश्य, दो बिंदु परिदृश्य

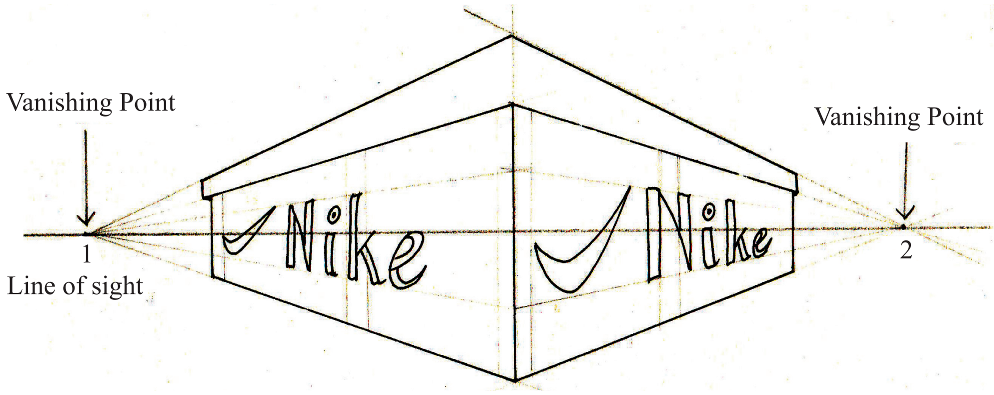

चित्र 1.2(क): जूतों का डिब्बा, दो बिंदु परिदृश्य

1.1.3 तीन बिंदु परिदृश्य

इस प्रकार के परिदृश्य का प्रयोग उस समय किया जाता है जब हम किसी भवन का चित्रण नीचे अथवा ऊपर से देखकर करते हैं। तब हमें प्रत्येक दीवार के दो वेनेशिंग प्वॉइंट के साथ तीसरा वेनेशिंग प्वॉइंट भी दिखता है, दीवार के ऊँचाई की ओर अथवा नीचे की ओर।

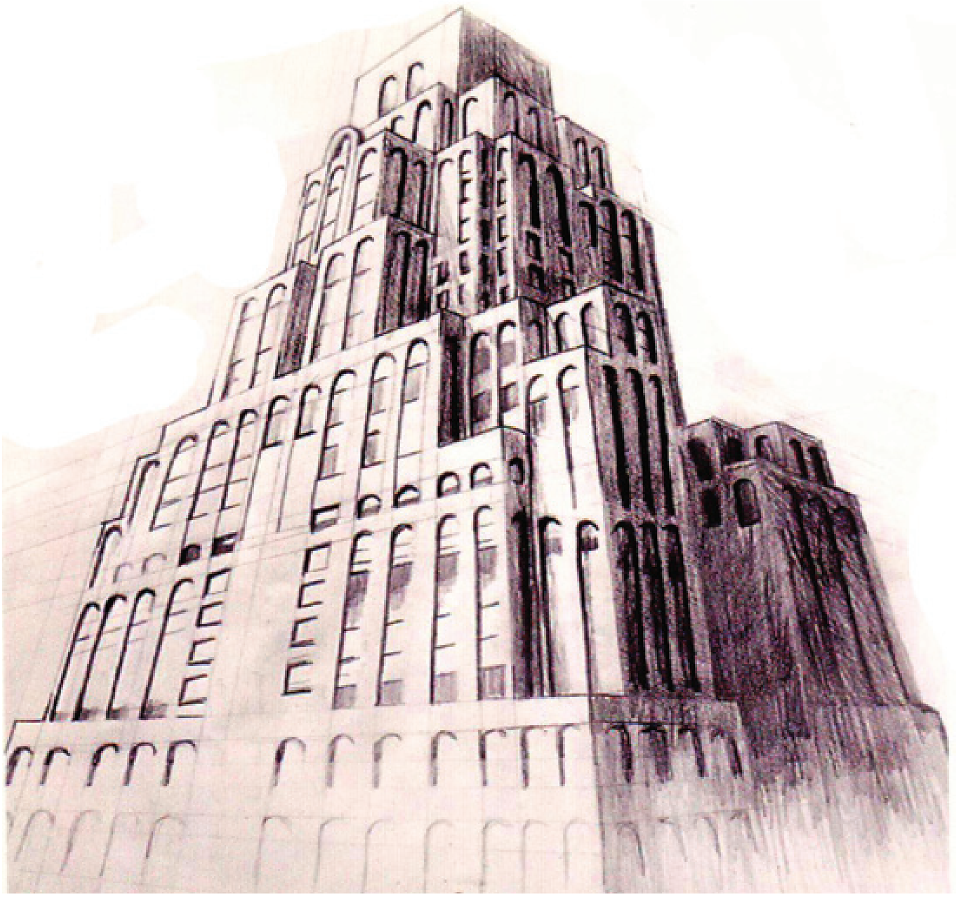

चित्र 1.3: भवन, तीन बिंदु परिदृश्य

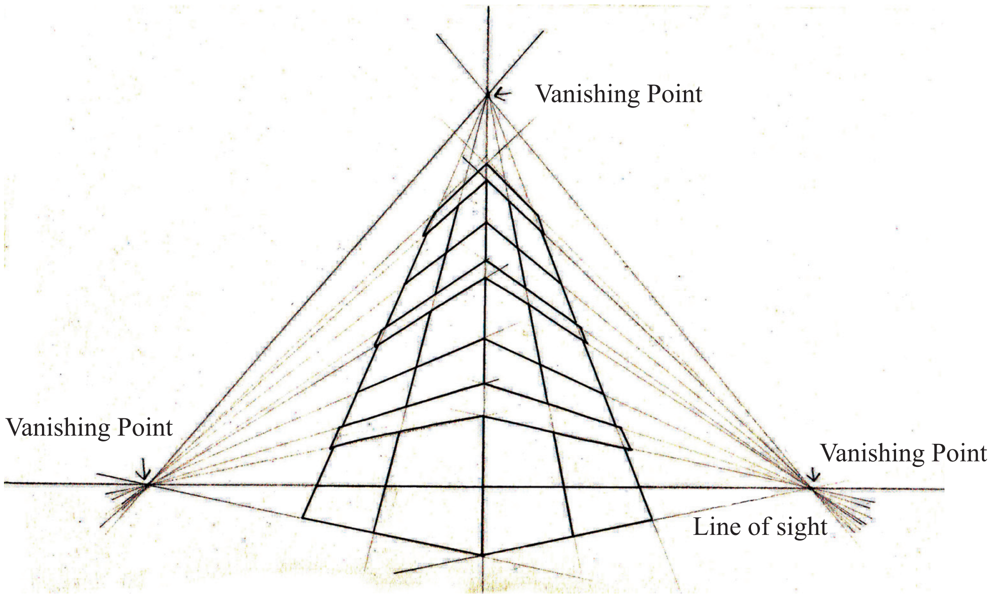

चित्र 1.3(क): भवन का रेखांकन, तीन बिंदु परिदृश्य

1.2 संतुलन

एक अच्छा संयोजन इस बात निर्भर करता है कि आपने दिए हुए स्थान में आकारों का व्यवस्थापन कितना संतुलित एवं अनुपातिक किया है। यहाँ स्थान का आशय उस क्षेत्र से है जिसका प्रयोग चित्र में किया जाना है। उस स्थान का प्रयोग हम कैसे करेंगे, यह हमारी अपनी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि दस भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों को कोई स्थान देते हैं, तो वे इस स्थान का प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से करेंगे। इसका अर्थ यह है कि उन सभी के द्वारा बनाया गया चित्र एक दूसरे से भिन्न होगा। नीचे दिए गए चित्रों को देखें; उन्हें देख कर आप समझ सकेंगे कि इनमें कौन-सा चित्र अच्छी तरह संतुलित है एवं सही अनुपात में संयोजित किया गया है।

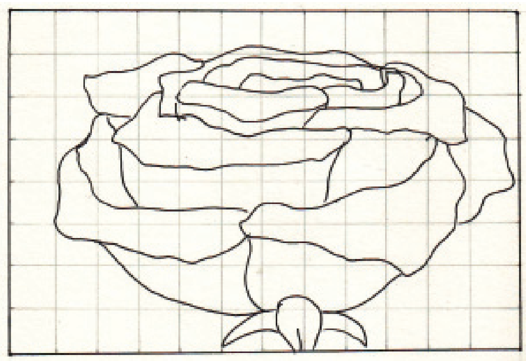

चित्र 1.4

चित्र 1.4 में पुष्प का चित्र दिए गए स्थान के अनुपात में बहुत बड़ा बनाया गया है।

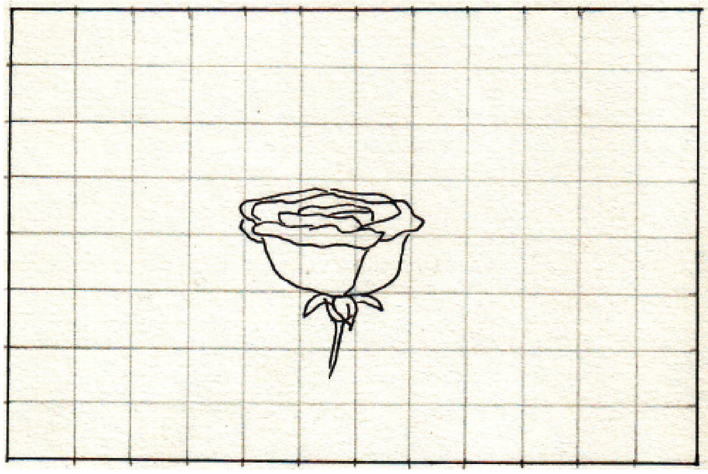

चित्र 1.4(क)

चित्र 1.4(क) में दिए गए स्थान की तुलना में पुष्प बहुत छोटा बनाया गया है।

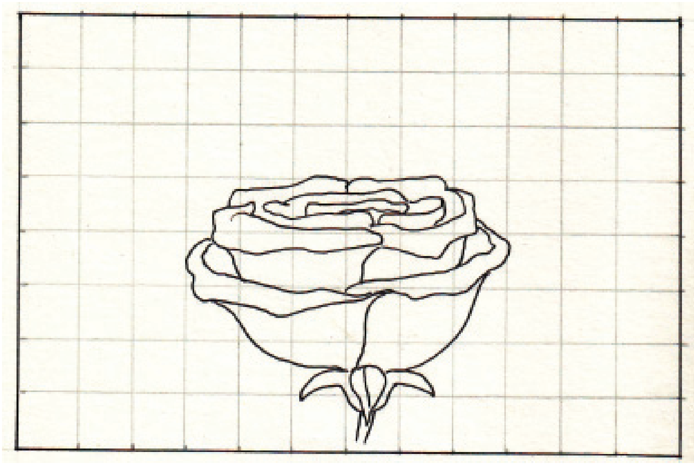

चित्र 1.4(ख)

परन्तु चित्र 1.4(ख; में पुष्प का चित्र दिए गए स्थान के अनुरूप पूर्ण संतुलन एवं अनुपात में चित्रित किया गया है।

1.3 पैंसिल द्वारा शेडिंग

पेंसिल चित्रांकन का सबसे सरल एवं सुलभ उपकरण है। बाजार में रंगीन पेंसिल भी उपलब्ध हैं। इन्हें सख्त (H) एवं काला (B) श्रेणी में बांटा गया है। हर पेंसिल का प्रयोग अधिकांशत: कागज पर किया जाता है। एक अच्छे चित्रांकन में अनेक श्रेणी (ग्रेड) की पेंसिलों का मिला-जुला प्रयोग किया जाता है। लेकिन पहले हमें यह समझना होगा कि स्केचिंग एवं ड्राइंग दो अलग-अलग चीजें हैं। किसी विषय-वस्तु के चित्रण के लिए हम स्केचिंग से आरंभ करते हैं, उसके मूल्य, अनुपात एवं बनावट को समझते हुए धीरे-धीरे हम उसकी पूर्ण विवरणात्मक ड्राइंग की ओर बढ़ते हैं। इसके बाद हम प्रकाश स्रोत को ध्यान में रखते हुए शेडिंग करते हैं अथवा रंग भरते हैं। लेड

पेंसिल एवं रंगीन पेंसिल दोनों से ही एक ही तकनीक से काम किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि रंगीन पेंसिलों से रंगांकन करते हुए हम रंगों की विभिन्न छटाओं को आसानी से देख सकते हैं जो लेड पेंसिल से किए जाने वाले एक वर्णीय शेडिंग कार्य में दिखाई नहीं देतीं।

1.3.1 पौधे के चित्रण हेतु आवश्यक सामग्री

पौधे के चित्रण हेतु विद्यार्थी के पास निम्नलिखित सामग्री होनी चाहिए :

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
2. ड्राइंग पेपर
3. ड्राइंग क्लिप अथवा पिन
4. रंगीन पेंसिल एवं एच.बी., 2बी, 4बी, 6बी ग्रेड की लेड पेंसिल
5. रबर
6. पेंसिल छीलने के लिए कटर या शार्पनर

अभ्यास 1

पौधे का चित्रण श्वेत-श्याम (लेड पेंसिल शेडिंग)

प्रकृति में अनेक प्रकार के पौधे, फूल एवं पत्तियाँ पाए जाते हैं। आरंभ करने के लिए कोई एक पौधा चुन लें। स्केचिंग आरंभ करने से पूर्व उसके प्रत्येक विवरण का बारीकी से अध्ययन करें। इसके बाद दिए गए कागज पर एच. बी. पेंसिल से स्केचिंग शुरू करें। स्केचिंग करते समय पौधे की बनावट एवं उसकी कोमलता का ध्यान रखें। तदुपरान्त 2बी. पेंसिल की सहायता से पौधे के अधिकतम विवरण दर्शाते हुए रेखांकन पूर्ण करें।

चित्र 1.5: पौधा

केवल बाह्यरेखाओं से किसी वस्तु की ठोस स्थिति को नहीं दर्शाया जा सकता। इसलिए छाया-प्रकाश का चित्रण आवश्यक है। इसके लिए चित्र में छाया एवं प्रकाश की मात्रा समझना जरूरी है। इससे चित्र में अतिरिक्त गहराई प्राप्त होती है तथा त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न होता है। धीरे-धीरे इससे पत्तियों का आकार एवं प्रभाव निखरता है।

चित्र 1.5(क): पौधा

चित्र बनाने की शुरुआत उंगलियों का हल्का दबाव डालते हुए बनाई गई हल्की रेखाओं से करना चाहिए क्योंकि इन्हें मिटाना भी आसान होता है। पेंसिल की सहायता से कागज पर विभिन्न टोन प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। 2बी. पैंसिल का हल्के हाथ से प्रयोग करते हुए कोमल टोन प्राप्त करें। गहरी टोन प्राप्त करने के लिए अधिक दबाव डालते हुए 4बी. पैंसिल का तथा अत्यधिक गहरी टोन की प्राप्ति के लिए 6बी. पैंसिल का प्रयोग करें।

चित्र 1.5(ख)

अभ्यास 2

रंगों से फूल का चित्रण (रंगीन पेंसिल से शेडिंग)

कलाकारों को फूलों का सौंदर्य हमेशा से आकर्षित करता रहा है। अब हम गुलाब के फूल का चित्रण करेंगे। चित्र बनाना आरंभ करने से पहले फूल के प्रत्येक विवरण का बारीकी से अध्ययन करें। इसके बाद दिए गए कागज पर लाल रंग की पेंसिल से फूल बनाना शुरू करें। इसके बाद हरे रंग की पेंसिल से पत्तियों को अधिकतम विवरण के साथ चित्रित करें।

चित्र 1.6: गुलाब

अब लाल एवं हरे रंग की छटाओं का महत्व समझने का प्रयास करें। अब फूल में लाल रंग की हल्की एवं मध्यम टोन की सहायता से शेडिंग का प्रयत्न करें तथा ऐसा ही हरे रंग से पत्तियों में करें।

चित्र 1.6(क)

चित्रांकन के अंतिम चरण में फूल एवं पत्तियों में गहरी टोन भरकर गहराई एवं त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करें।

चित्र 1.6(ख)

यद्यपि सारी वनस्पतियाँ हरे रंग की होती हैं किन्तु हमें हरे रंग की भिन्न टोन्स का प्रयोग करना चाहिए, जिससे अधिकतम प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। जलरंगों के प्रयोग की अनेक तकनीकें हैं परन्तु सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली तकनीक हैं- अपारदर्शी (पोस्टर रंग) एवं पारदर्शी (जल रंग)।

पोस्टर रंग (अपारदर्शी तकनीक)

पोस्टर रंग अपारदर्शी होते हैं। वे उस रंग सतह को छिपा देते है जिस पर वे लगाए जाते हैं। सफेद अथवा हल्का रंग टोन की विविधता के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह तकनीक सुविधाजनक होती है क्योंकि इसमें आप एक रंग पर दूसरे रंगों की अनेक सतह लगा सकते हैं तथा किसी गलती को सुधार सकते हैं। चूँकि पोस्टर रंग अपारदर्शी होते हैं, इसलिए हल्के टोन से रंगांकन आरंभ करना चाहिए।

जलरंग (पारदर्शी तकनीक)

जलरंग लगाने के कई तरीके हैं, उनमें से अनेक इस बात पर निर्भर करते हैं कि कागज में नमी है अथवा नहीं है। जलरंगों की पतली एवं अर्द्धपारदर्शी परत लगाने के लिए रंग में उपयुक्त मात्रा में पानी मिलाना चाहिए। जब एक रंग की परत पर दूसरे की परत लगाई जाती है तब पहली परत का रंग, दूसरे रंग की परत के अन्दर से साफ झलकता रहता है। इसलिए अधिक प्रकाश दर्शाने हेतु सफेद भाग छोड़ने के बाद रंग की हल्की टोन लगाई जाती है।

परिदृश्य चित्रित करने हेतु आवश्यक सामग्री

परिदृश्य चित्रण करने हेतु शिक्षार्थियों के पास निम्नलिखित सामग्री होनी चाहिए-

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
2. ड्राइंग पेपर
3. ड्राइंग क्लिप अथवा पिन
4. एच. बी. पैंसिल
5. मिटाने वाला रबर (इरेजर)
6. पेंसिल छीलने के लिए कटर या शार्पनर
7. जलरंगों के टयूब अथवा टिक्कियाँ
8. रंग मिलाने के लिए ट्रे
9. 2, 4, 6, 8, 10 एवं 12 नम्बर के जलरंग ब्रश
10. कपड़े का एक टुकड़ा
11. पानी रखने हेतु प्याला

अभ्यास 3

जलरंग से परिदृश्य चित्रण

दृश्य का रेखांकन पेंसिल से पूरा करें। अधिक प्रकाश दर्शाने के लिए सफेद भाग छोड़ें और यह ध्यान रखें कि सफेद भाग पर कोई दाग-धब्बा न लगे।

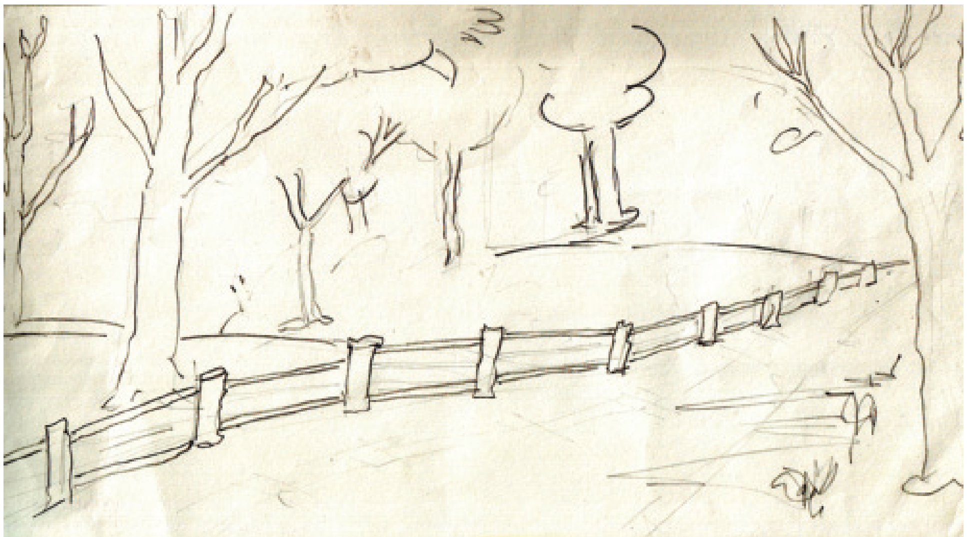

चित्र 1.7: परिदृश्य

पहले, रंग की हल्की टोन लगाएँ, जब रंग की यह परत हल्की नम हो तभी परिदृश्य में छाया-प्रकाश का ध्यान रखते हुए रंग की मध्यम टोन की परतें धीरे-धीरे लगाएँ।

चित्र 1.7(क)

चित्रण के अंतिम चरण में चित्र में गहराई उत्पन्न करने के लिए रंग की गहरी टोन का प्रयोग करें। गहरी टोन बनाने के लिए अधिक रंग में कम मात्रा में पानी मिलाएँ। इसके बाद अत्याधिक प्रकाश दर्शाने के लिए कागज के छोड़े गए सफेद भाग में रंग की बहुत हल्की टोन लगाएँ।

चित्र 1.7(ख)

आपने क्या सीखा

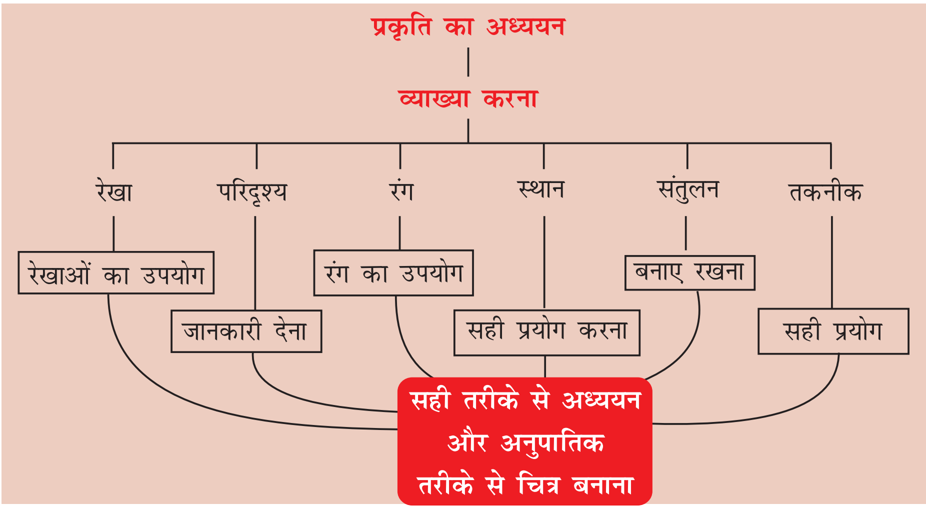

पाठांत प्रश्न

1. गमले में लगा एक साधारण पौधा लें एवं उस पर पड़ने वाले छाया प्रकाश को ध्यान में रखकर कागज पर उसका चित्र बनाएँ।
2. फूलों का एक संयोजन चित्रित करें एवं उसमें 2बी., 4बी., एवं 6बी. पेंसिलों की सहायता से शेडिंग करें।

3. एक काल्पनिक परिदृश्य चित्रित करें एवं इसमें अपारदर्शी तकनीक से पोस्टर रंग भरें।
4. घर से बाहर जाकर परिदृश्य चित्रण हेतु एक स्थान का चयन करें, इसका रेखांकन तैयार करें तथा इसमें पारदर्शी तकनीक से जलरंग भरें।

शब्दकोश

प्राचीन	पुराना
जंगल उजाड़	एक जंगली क्षेत्र जो मनुष्यों की छेड़-छाड़ से अछूता है
दृष्टि-भ्रम	ऐसी कोई चीज जो देखने का भ्रम पैदा करे
वैनिशिंग प्वाइंट	एक ऐसा बिन्दु जहाँ दूर जाती समानान्तर रेखाएँ मिलती प्रतीत हों
अपारदर्शी	जिसके आर-पार देखा न जा सके
निश्चित करना	स्थान पक्का करना
टोन्स	रंगों की छटाएँ
परिदृश्य	चित्रांकन का एक पक्ष (perspective)